कदाचित् नहीं हूँ मैं

[कविता-सग्रह]

रेवतीरमण शर्मा

साहित्यागार

सवाई मानसिंह हाईवे, जयपुर (राज)

राजस्थान साहित्य अकादमी उदयपुर, के आर्थिक सहयोग से प्रकाशित

कदाचित् नहीं हूँ मैं
(काव्य संकलन)

Kadachit Nahin Hoon Main
(Collection of Poems)

○

रेवतीरमण शर्मा

○

प्रथम आवृत्ति 1985

○

मूल्य पच्चीस रुपये मात्र

○

प्रकाशक
साहित्यागार
सवाई मानसिंह हाईवे, जयपुर (राज०)

○

मुद्रक शर्मा ब्रदर्स इलैक्ट्रोमैटिक प्रेस, अलवर।

प्रिय भाई कैलाश की याद मे

अनुक्रम

अपनी ओर से

मेरी कविताओ का यह दूसरा सग्रह है। मेरा इतना ही प्रयास रहा है कि इन कविताओ मे मेरी रचना का विकास सहज और साफ परिलक्षित हो। यह कितना हो पाया है यह तो सुधी पाठक ही जान पायेंगे। कविता कम जितना सामान्य है उतना ही विशिष्ट भी है। इस सामान्य और वशिष्ट्य की द्वन्द्वात्मकता से ही कला-कम का विकास होता रहा है। इस प्रक्रिया से मने अपने आस-पास की घटनाओ, दृश्यो परिदृश्या, जीवन की कटुताओ, अन्तर्विरोधा को जैसा कुछ अनुभव किया है और जैसा जीवन यथाथ को समझा है वही सब मेरी सवेदना के रूप म प्रकट हो सका है। मै सिफ इतना ही जानता हूँ।

प्रख्यात कवि समालोचक श्री नद चतुर्वेदी ने मेरी कविताओ के बारे मे लिखा है "एक कवि के सम्बन्ध म बहुत कुछ कहा जा सकता है, उसे बहुत से लोग कहे तो अच्छा रहता है।"

मैं भूमिका लेखन प्रकाशन और आर्थिक सहयोग के लिए क्रमश आदरणीय नद बाबू श्री रमेश वर्मा, साहित्यागार, जयपुर तथा राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर का आभारी हूँ।

49 मधुवन, अलवर
वसत पचमी, 1985

—रेवतीरमण शर्मा

आइये, रेवतीरमण की कविताओं से मिलें

रेवतीरमण शर्मा को मैंने उनकी कविताओं से जाना है, उनके आंतरिक मिजाज और अन्तद्वन्द्व को भी। एक हद तक मन की दुनिया को उथल पुथल कर देने वाली कविताओं के साथ वे शांत और मदुभाषी रह सकते हैं। वे हमारे प्रांत के उन कवियों मे हैं जो कवित्व का ढोल नही बजाते न प्रतिद्वन्द्विता करते है न प्रतिस्पर्धा और न ही वाणिज्य। इन कविताओं को, जो इस सकलन मे छपी है, वे मुझे सिर्फ दिखाने के लिये लाये थे। बाद मे सकोच—बहुत ज्यादा सकोच के साथ कहने लगे कि म उन्हें पाठकों से मिला दूँ। कविता के सिलसिले म यही हो सकता है उन्हें पाठकों से मिलाया ही जा सकता है। पहले आप कविताओं से मिल लें और यदि आप पूरी आत्मीयता से मिल लिये है तो पाठकों और काव्य प्रेमियों से मिला दें।

रेवती बाबू की कविताओं से मिलने के लिए मैं तीन दिन तक उनके साथ रहा। एक एक कविता पढना कवि से बात करना फिर कवितायें पढते रहना। इस तरह कविताओं का पहला पाठ समाप्त हुआ। दुबारा उन्हीं कविताओं को परिष्कृत रूप म पाकर पढकर प्रसन्न होना स्वाभाविक था। कविताओं का मिजाज दोस्तों की तरह होता है वे बहुत से रहस्यों को भी समझाती हो लेकिन बहुत से असमंजसकारी इरादों को हल्के हल्के बातों ही बातों म खोल देती हैं। ऊबड खाबड, बेतरतीब रास्तों वाली जिन्दगी चुटकी बजाते बजाते उम्मीदों और रोशनी मे नहायी लगती है।

रेवतीरमण शर्मा की रचनाओं म मैं एक गहरा सामाजिक सरोकार देख पाता हूँ, इससे भी ज्यादा साफ सुथरी बात कहना हो तो यह कि एक निडर समाजवादी सरोकार' देख पाता हूँ। लगभग हर कविता म व इस 'समाजवादी सरोकार' को स्पष्ट और मजबूत होने देते है। कई कविताओं मे ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे वे पहले एक कथ्य ढूँढ लेते हो बाद म कविता लिख देते हो और शायद इसीलिए इन कविताओं म मेरे लिए कुछ भी 'महमा, अन्दरूनी या आत्मीय' जैसा कुछ नही होता। बाहर

ग्रौर ग्र"दर की दुनिया एक सी होती है—वर्गों म बटी, यातना की सीढ़ियो से बनी हुई, ऊँची नीची ग्रौर खूनियों से बेखबर।

इस एक ग्रायामी दुनिया ग्रौर कथ्य से कवि उन ग्रनेक कविताग्रो को लिखता है जो प्रारम्भ से ग्र"त तक एक ग्रथ वाली होती हैं स्पष्ट ग्रौर समझ मे ग्राने वाली। इसस किसी हद तक कविता पुख्ता होता है ग्रौर कवि तथा पाठक के बीच सारे काल्पनिक ग्रथ विलुप्त हो जाते हैं। ऐसी कविताग्रो से जि"दगी की तकलीफें समझन की शक्ति बढती है ग्रौर तब शायद यह सकल्प शक्ति भी बढती है कि हम गैर-बराबरी, साम्राज्यवादी ग्रौर युद्धो माद बढाने वाली ताकता से लडन क लिय एक राजनीतिक, सैद्धान्तिक पार्टी-लाइन पर मोर्चा बनाना चाहिए। इस विश्वास को साथ लेकर वे लिखते है—

तुम्हारे पिता
देश के कोटि-कोटि जन के साथ
गाधी के ग्रसहयोग के लिए / सहयोग बने
ग्रग्रेज साम्राज्यवादियो के खिलाफ / सिफ ग्राजादी के लिए
ग्रब ग्राजादी की के"द्रात्मकता के लिए
ग्रहम् हो गई है लडाई।

(खिलाफत के खिलाफ)

बँटता है खेमा मे मछली दरबार
मूखता है ग्राजादी के स्वप्न पालना
जुडेगे मूल धारा से हम / जान "गे
होगे ग्राजाद।

(लाल मछली काच घर की)

बीहड घाटी दरख्तो के बीच
नवगीत गाता है / चिडियो का झुण्ड
तोडता है ग्रकेलापन / भरता है मन का खालीपन
चिडियो का झुण्ड
होता है सामूहिकता का ग्राभास
पहाड के सीमा"त पर बनी

सामन्ती दीवारो के सहस्रों छिद्रो से
मुस्कुराते है हजारो सूरज एक साथ।

(अहसास)

इन और ऐसी कविताओ मे समाजवादी चिंतन और सिद्धान्त के बहुत से शब्द होते हैं जो मेरी दष्टि से भाषा की रचनाशीलता को घटाते हैं। समाजवादी या साम्यवादी सिद्धान्तो की कविता का आन्तरिक उल्लास मनुष्य को उसकी लम्बी, दुरूह, कठिन, निराशामय और सश्लिष्ट दुनिया से काट कर पार्टी की सिद्धान्त वाक्यावलियो से जोड देने मे नही है बल्कि यह बताने मे हैं कि आज की जिन्दगी किस कदर असहाय होकर भी एक नयी और समतावादी दुनिया के लिये सघषरत है। समाजवादी कविताओ को इसीलिए न केवल एक गहरी समझ और आत्मीयता की आवश्यकता होती है बल्कि उस लचीली, अर्थवती भाषा की भी जरूरत होती है जो दुनिया को समझाती और नयी बनाती चलती है। चाहे धम हो या राजनीति या कोई अन्य अनुशासन, जितनी बार हम उसे जिद और घेरेबन्दी मे लायेंगे कविता प्रेमी हम से दूसरी तरह की इच्छा करने लगेंगे, शायद पार्टी के लोग भी।

रेवतीरमण शर्मा की अच्छी कवितायें वे हैं जिनमे वे जिन्दगी की सारी विसगतियो का बडा परिदृश्य देखते है, जहाँ उल्लास की ज्यादा रोमाचकारिता नही होती, हल्की हताशा होती है लेकिन एक पुख्ताविश्वास वाली कम सकुल जिन्दगी भी होती है—

परसो आम चुनाव
बडे नेताओ के भाषण है आज
हाथ मे हथौडा लिये
पहाड से लौटते हुए
सबने सुना
"केवल तुम्हारे मत से
तुम्हारा भाग्य बदलेगा"
वोटो-वाला दिन निकल गया
पत्थर तोडते, तोडते पत्थर

(किसी एक दिन)

कक्षा का मौन तोडता है घीसू
मास्साव वह नही आ पायेगा
कल से स्कूल नही आ सकेगा
बाबा ने कहा है
'तू सकूल नहीं जायेगा
चौधरी की भैंस चरायेगा
टक्टर धायगा / हुक्का भरेगा—
अपना कर्ज चुकायेगा।"

(तरक्की)

जिस नगर मे कवि रेवतीरमण रहत हैं वह रगा की आतिशबाजी का नगर है। वसत आते आते पलाश के चटख लाल रगा से अरावली की घाटियाँ दहकने लगती है। अलवर के तमाम नये कवियो ने रग के इस समुद्र पर मनोहारी कवितायें लिखी हैं। रेवतीरमण की शायद ही कोई कविता हो जिसम अलवर की प्रकृति पहाडा का रग, गरीबी का शोकात सवाद, पहाडो पर गिरता, भुकता, डूबता सूरज मजदूरो का साहसी स्वर डलिया बनात छोटे छोटे बालका के मुरझाये मासूम चहरे मौजूद न हा। उनका होना ही रेवतीरमण का होना है। अलवर के सब कवियो म सिर्फ रेवतीरमण ही है जो इतने स्थानीय होते हुए इतने आवश्यक हैं और एक हद तक महत्वपूर्ण भी।

हमे यह आशा करनी चाहिए कि रेवतीरमण मनुष्य इतिहास के उस पक्ष के साधक कवि हागे जो बडे-बडे सिद्धान्तो के लिए सघर्ष करने के साथ हर जगह छोटे छोटे आतक, कपट, अवसरवादिता, क्षुद्रता और कट्टरता के खिलाफ खडे हाने का साहस करता है। आज कविता रचना की प्रासगिकता यही है—यही शायद सबसे बडी जरूरत है।

—नद चतुर्वेदी

कवि नेरुदा

जब दुनिया के लेखको की कलमे
नीले अक्षर लिखती थी
तब लाल आग उगलती थी
तुम्हारी कलम
साम्राज्यवाद के विरोध मे ।

मैं जानता हूँ कवि
तुम्हारा लिखा हर शब्द
सुबह की लालिमा जैसा है
परतन्त्र लोगो की गरम उसासें
अंकित करती रही है तुम्हारी कलम ।

तुम्हारी भाषा
दुनियाँ के अद्वितीय प्यार की भाषा है ।
तुम्हारी कविता ने
ठण्डे लोगो को आग दी है ।

तुम्हारी कविता के
लय और ताल ने
बिखरते लोगो को एकजुट किया है ।
दुनियाँ के परतन्त्र लोग
कूदे हैं आग की दीवार
आजादी के लिए—
तुम्हारी कविता गाते हुए ।

लोग गाते रहेग तुम्हारी कविता
और जिन्दा रहोगे कवि
रक्तबीज है तुम्हारी कविता
जन्मातो रहेगी जो नेरुदा और नेरुदा ।

खत्म नही हुई है लडाई

यह कैसे माना जाय
लडाई खत्म हो गई है ?

बढई के चौपाल मे
भीमा अब भी रन्दा रगडता है
एक मन जई मे बप भर

सुरता–खिलाडी की
एक राटी मे पाखाना उठाती है आज भी ।

बडी मूछें रखने पर
गोली का शिकार होता है रामू काका
मजूरी मागने पर
कोडे खाता है दीनू खेत पर

भीमा, सुरता, रामू, दीनू जैसो की
उमड आई है एक निहत्थी फौज
आसू-गैस के गोलो के बीच
एक अबोध ज्ञान लडने लगता है
सुनियोजित षडयन्त्र के खिलाफ

करते है आजादी की घोषणा
ईट के भट्टो को छोड
विद्रोही मजदूर ।

सिले होठो के
फडफडाने के जारी है प्रयास
खिलाफत की शुरूआत ही तो है यह

यह कैसे माना जाय
लडाई खत्म हो गई है ?

किसी एक दिन

एक दिन लौट ही आवेंगे
सचमुच अच्छे दिन
किसी एक दिन।

सब लोग कम से कम
सप्ताह मे रखते हैं
एक दिन का अवकाश।

फजल, रोबट और शरबती का
निकल जाता है रविवार/शुक्रवार
या कि पूरा सप्ताह, बिना अवकाश
पत्थर तोडते, तोडते पत्थर।

बसाखी के मेले पर
मौसम गीत गाता है
पहाड से टकराता है उल्लास गीत
फजल, रोबट और शरबती
याद करते हैं
मेले की रगीनियाँ
पत्थर पर हथोडा मारते
पत्थर तोडते, तोडते पत्थर।

परसो आम चुनाव है
बडे नेताओ के भाषण हैं आज
हाथ मे हथौडा लिये—
पहाड से लौटते
सबने सुना

"केवल तुम्हारे मत से
तुम्हारा भाग्य बदलेगा"
वोटो-वाला दिन निकल गया
पत्थर तोडते, तोडते पत्थर।

सुख के दिन लौट ही आवेंगे
किसी एक दिन
यही सोचते
निकल जाता है एक और दिन
पत्थर तोडते, तोडते पत्थर। ▭

समदर

मैं जब
सडक पर होता हूँ
अपने को समदर मे पाता हूँ ।

मैं उसकी थाह पाना चाहता हूँ
मेरे बढते कदमो के साथ
फैलता ही जाता है
अन्त हीन समदर ।

मैं उसे
अपने मे समेटना चाहता हूँ
तभी समदर
हाहाकार मचाता
उत्ताल-तरगो पर उछाल
मुझे
वापस सडक पर
फेंक देता है ।

मेरे गिर्द
बिछी पाता हूँ
मेंढकों, घोंघो, मछलियों की लाशें ।

मैं समदर का
विरोध करता हूँ
वह मेरा श्वेत-पत्र
लहरो मे समेट
लौट जाता है
घड़ियालो, मगरमच्छो के साथ ।

□

एक खण्डित मूर्ति सा
नदी की धार मे बहा दिया जाता हूँ
तब मैं नही होता हूँ ।

मेरी वफादारी कब होती है
कब नही/नही जानता मैं
शिखर पर होता हूँ तब
होती है मेरी वफादारी

कब चाहत का आदमी
कब नही/नही जानता
जब जमीन पर होता हूँ
मैं नही होता हूँ ।

मेरी ईमानदारी,
निष्ठा, सच्चाई
उनका सारोकार है

अपने अहं से बोझिल होता हूँ
स्वाभिमान रहता है गिरवी
तब मैं नही होता हूँ ।

एक साये के बिना
पैरो के नीचे जमीन नही रहती
मैं होता हू तब—
मेरे चेहरे पर एक और चेहरा होता है ।

जारी नाटक का
बोना पात्र होता हूँ
परदा गिरने पर
सडक का आदमी होता हूँ
तब कदाचित नही होता हूँ मैं ।

सूरज

सूरज सिर्फ
आग का गोला नही है।

आदमी को जरूरत है सूरज की
जो सबकी आँखें खोलता है
दुनियाँ के निस्सीम सौंदय के लिये।

हर सुबह लम्बी कर देता है
दोपहर छोटी
और शाम कर देता है लम्बी और लम्बी
आकृति सभी की।

सबको बराबर करता है
सबका देता है किरणों का अलाव
सबको रोशनी के द्वार।

आदमी

आदमी पेड तो नही है
जो पतझर मे नग्न,
वसन्त मे पीताम्वरधारी
वर्षा मे हरा-सघन
गदराया हो जाता है ।
आदमी वस्त्रो मे भी होता है नग्न ।

आदमी हवा तो नही है
जो खुद के साथ
सभी को जिन्दा रखती है ।
खुद की तरह
वनाती है आजादी का पर्याय
आदमी की आजादी
हवा जैसी तो नही है ।

आदमी चिडिया तो नही है
जिसे चुगने के वाद
डैने फलाने को आकाश चाहिए ।

आदमी प्याज की परत है
जिसके छिलके उतरते-उतरते
वह, वह नही रहता ।

खिलाफत के खिलाफ

सुनो स्नेहा
तुम्हारे दादा
फासी जमनी और
सैन्यवादी जापान के खिलाफ लडे
अग्रेजो के लिए,

अग्रेजो ने
आजादी के दिवा-स्वप्न दिखाये
जो विखण्डित हो गये।

तुम्हारे पिता
देश के कोटि-कोटि जन के साथ
गाधी के असहयोग के लिए
सहयोग बने
अग्रेज साम्राज्यवादियो के खिलाफ
सिफ आजादी के लिए।

अब आजादी की केन्द्रात्मकता के लिए
अहम् हो गई है लडाई।

चाकू की नोक लिखती है
प्रेम की इबारत
लुटती है अस्मिता और शील

सुनो स्नेहा
हम युद्ध और धर्मान्धता विरोधी रहे है
सिफ धम सापेक्ष बचे हैं हम।

अपनो मे ही
अपनो की टकराहट है
तनाव है
खिलाफत और बगावत है ।

हम तार-तार जुडे
बिना बल लगे धागे है ।
देश कोई वस्तु नही
जीवन्त सागर है ।
जहा ज्वार उठते है
शान्त होने के लिए
जरूरत है सिफ
देश को देश रहने देनें की ।

लाल-मछली काचघर की

घूमती है बार-बार
ऊपर नीचे, नीचे ऊपर
मछली काचघर की।

बिना रुके
फिसल-फिसल जाती है,
मछली काचघर की।

सुन्दर शोपीस है मछलीघर
लाल, पीली, सुनहरी है
मछली काचघर की।

छोटा है सीमा ससार
छोटा है इनका घर ससार
बडी को देख छोटी
भागती है तेज-तेज।

सब कोई देख कहता/बन्द है फिर भी
कितना खुश है मछली दरबार
क्रुद्ध होती है मछली लाल
कब तक बन्द रहेगी हम
खायेगी कब तक आटे की गोलियाँ
केचुए मरे हुए।
करती है विद्रोह मछली लाल।

कहाँ नदी सी चचलता ?
कहाँ लहरो की चपलता यहाँ ?
सडता है खडे पानी मे अग-अग
बटता है खेमो मे मछली दरबार
मूखता है आजादी के स्वप्न पालना

जुडेंगे मूल-धारा से हम
जान देंगे/होगे आजाद
बोलती है
छोटी-छोटी मछली अनेक
तोडती है मछलीघर
मछली-लाल ।

चिडिया

छोटी चिडिया
तुम्हें हम स्वच्छन्दता से
फुदकते देखते हैं ।

निर्भयता से मुक्त उडान
भरते देखते हैं ।

हम तुम्हें अपने चिडे से
प्यार करते देखते हैं
वह तुम्हारे प्यार में पगा
तुम्हारे आगे-पीछे फुदकता है ।

हम तुम्हें ठुमकियों से नाचते,
कनखियों में देखते हैं
देखते हैं तुम्हें हवा में गोता लगाते
उन्मुक्त/स्वतन्त्र ।

तिनका-तिनका चुन
हम तुम्हें अपने
नीड का निर्माण करते देखते हैं
पूरे संकल्प और
        तल्लीनता के साथ ।

छोटी चिडिया
प्यार की यह भाषा
उन्मुक्तता का यह अहसास
जीवन निर्माण और
जीने की यह कला
हम देखते हैं—तुममें
हम देखते हैं बस
        बिना अपनाए ।

एक चिड़िया आगन की

आगन के गुलाब के
गाछ पर बैठ
इठलाती है चिड़िया ।

कभी हरी दूब पर बैठ
मोती से बिखरे ओसकणो पर
फलाती है डैनें ।

सब देखती है
आगन मे बिटिया
पकडने को होती है
चिडिया फुर से उड जाती है
जा बठी है सिरस की ऊँची टहनी पर ।

गुलाब का एक फूल तोड
लौटती है बिटिया
होता है परिदृश्य विस्तृत

सिर पर स्नेह-सिक्त हाथ धरे
कहती ह मा, बिटिया ।
आगन से चिड़िया के उडने की
बहुत पुरानी है परम्परा ।

चिड़िया पहचानती है

कमरे की सब खिड़कियाँ
खुली रहती हैं
दरवाजे अक्सर बन्द

चिड़िया
हर बार
खिड़की से आती है
चिड़िया
हर बार
खिड़की से जाती है

दरवाजा खुलता है
कोई आता है अन्दर
दरवाजा बन्द हो जाता है
कोई जाता है।

चिड़िया
दरवाजा खुलने पर भी
खिड़की से आती है
और चली जाती है।
अब खिड़की बन्द है
दरवाजा खुला है
चिड़िया ने आना छोड़ दिया है
कमरे में

अब इस कमरे में
पुरुष रहने लगा है।

चिडिया और हम

चिडिया फुदकती है
चिडिया गाती है
वह जब चाहे
फुर से उड जाती है।

हम न गाते है
न गा पाते हैं।
न जहाँ जी चाहे
उड आकाश नाप सकते हैं।

अभावो के सागर मे
टूटे-पाल नाव लिए फिरते हैं
दो बात कहने
शब्द-सेतु बाँधने लगते हैं।

चोंच मे एक दाना ले
सारा ससार सजोनें लगती है चिडिया
वह गाने लगती है
लगती है फुदकने
मन चाहे उड जाती है

चिडिया है वह
आदमी है हम।

नफरत है

प्रमथ्यु !
तुमने कभी
देवताओं के चाकर
हेरमी को चाबुक मारकर
कहा था—

"तुम्हारी दासता से मैं अपनी
अनन्त पीडा नही बदलूँगा"

तुम्हे याद करता हूँ प्रमथ्यु
मुझे भी नफरत है
इन देवताओं से
जिनसे
तुम्हे नफरत थी।

स्वर्ग के वे देवता
जमीन पर आ गये है
हमारे बीच

पहले वे देवता
उडन खटोले पर उडते थे
अब चाँदी की तश्तरी मे उडते हैं।
तरते है साता समुद्र
सोने की नावो मे।

तुमने देवताओं की 'आग' चुरा
जन-जन के घर पहुँचाई

मैं देखता हूँ प्रमथ्यु
ये देवता फिर
घर घर की आग छीन
कर रहे है
आग का नित नया खेल

अभी
पूरब से हवा आती है
पछवा को आना है
तब राख मे दबी चिनगारी से
आग की लपटे उठेगी ।
तब लाखो लाग
एक साथ
इन देवताओ को दफनायेगे
कोई नही बचा पायगा इन्ह ।

जो आदमी का
खून पीते है
आदमी को
भक्ष बनाते है
और आदमी
के बीच जीते है ।

अहसास

पहाड पर चढता हूँ मैं
चढता ही चला जाता हूँ
कदम-दर-कदम बढता हूँ
बढता ही चला जाता हूँ मैं,

पहाड पर चढता हूँ मैं
सम्पूर्ण तन्मयता के साथ
बीहड घाटी / दरख्तो के बीच
नवगीत गाता है
चिडियो का झुंड
तोडता है अकेलापन
भरता है मन का खालीपन
चिडियो का झुंड
होता है सामुहिकता का आभास
करता है
मेरी जडता को स्पन्दित
चिडियो का झुंड

पहाड पर चढता हूँ
हवा के आदेश पर

झुकी है फूलो-भरी टहनी
गहरी लाल-चटख
किसी के साथ होने का
होता है अहसास

बाहें फैलाए घाटियाँ
पुकारती हैं अनाम

नाम नही जानती घाटियां मेरा
घाटियो से नगे पैर
लौट आती है खुशबू
कराती है स्वागत-बोध

पहाड पर चढता हूँ मैं
और और चढने के लिए
कितना दु खद है उतरना
स्वाभिमान के
गिरने की तरह

पहाड के
सीमान्त पर बनी
सामन्ती दीवार के सहस्रो छिद्रो से
मुस्कुराते हैं
हजारो सूरज एक साथ

बोलने लगता
है सहस्रमुखी सूरज
चढने-उतरने से कालपुरुष
क्या जीवन हार जाते हैं ?
मैं हर दिन चढता हूँ
उतरने के लिए
उतरता हूँ
फिर से चढने के लिए ।

माटी

वहुत जरूरी है
माटी का होना
वहुत कुछ होती है माटी
बहुत नम ग्रौर
गुदगुदी
पैरों मे सिहरन
भरती है माटी

सभी कुछ तो है माटी
सभी को ग्रपने मे
एकाकार कर लेती है माटी।

वहुत वडा दर्शन है माटी
ग्रादमी को जिन्दगी देती है
जिन्दा रखती है माटी

ग्रचेता फिर भी
ग्रनन्य-चेतन
सजीव-उवरा

धरती की वेटी
वहुत सहनशील है
विना कुछ कहे
सभी को सब कुछ देती है।

माटी जमीन है ग्रादमी की
पहला चुम्बन है धरती।
मेरी माँ की तरह
स्नेह सिक्त / महिम्ए।

जमीन होने के लिए

कोई फायदा नही,
भैंस के आगे बीन बजाने
या मुर्दों के आगे रोने से
कोई नही सुनता
तूती नक्कारखाने मे

मैं जमीन से चिपकना चाहता हूँ
जमीन होनें के लिये
बेहद सवेदनशील

सब कुछ लहलहाता है
मेरे भीतर
होती है मेरी जमीन
स्पन्दित

मैं जमीन होना चाहता हूँ
सबकी सुनने के लिए।

कजरी-गाय

मालिक के खूँटे से
खोला जाकर
एक बड़े बाड़े में
मिला दिया जाता है उसे

पशुओं का यह काफिला गाँव-दर-गाँव
बढ़ता ही जाता है।
लाठी खाता अथवा
समय की मार खाता
बढ़ता है आगे और आगे।
जानवर कह नहीं पाता
अपनी बात
आदमी की तरह

ऊँचे दरवाजे के पीछे
घुसता लगता है झुंड
जो भी भीतर गया
लौटा नहीं कभी
कजरी जैसी अगणित गायों पर
बरसने लगता है खौलता पानी,

दनदनाते हैं बिजली के चाबुक
सभी कुछ है काम का
हाड़, मांस, खाल

व्यावसायिकता के दरवाज़े पर
सजता है सदा
ऐसा बाज़ार

वाक-अवाक
गवाते रहे हैं, अपने प्राण

सोचता हूँ
ठण्डा हुआ खून
कभी तो खौलेगा ही
व्यावसायिकता के खिलाफ

फर्क

आस्थावान-शिष्य से
गुरू ने
अगूठा मागा
और वह उन्हे मिल गया ।

शिष्य अमर हो गया
गुरू के छल-छद्म से ।

युधिष्ठिर ने
युद्ध भूमि मे
सदिग्ध-सच बोला,

गुरू को मरना पडा
शिष्य के छल-छद्म से ।

यह् कस्वा
जो कभी गाव था
काले सोने का मालिक है।

इस कस्वे मे
काले नागो की
आदमखोर वाबिया है ।
वाबियो के एक ओर
रह गया है गांव
गांव के सीने पर
वस गया है यह् कस्वा

वगले-दर-वगले
भिखारिन सी लेटी है सडके यहा
इन काली सडको पर
दौडती हैं वहुरगी कारें।

काला चेहरा लिये गाव
देखता है काली सडक ।

गांव की ओर दात निपोरते हैं
मकरी लैम्पो के झु ड

जो न होता काला सोना यहा
होता न पाच सितारा होटल/हैलीपैड

सवको सव कुछ है सुलभ
कुछ भी नहीं है उनका, जिनका गांव है यह
काले हाथ और काले चेहरे के सिवा।

नीद के बीच

रात
बहुत देर रात
भौंकते हैं कुत्ते।

घडघडाता निकलता है
तेजी से आटो-रिक्शा।

रोशनी चमकती है
कई रोशनदानो से एक साथ।
बुझने लगती है फिर
रोशनी एक के बाद एक।

सडक के उस पार
तरने लगता है करुण-क्रन्दन

सोचने लगता हूँ
कहा है मेरा पौरुष ?
चढती है पर्ते विवशता / अकमण्यता
और अनिश्चय की।

भय से लिपटता हूँ
रजाई मे।

सोचता हूँ
सीता का फिर हुआ है अपहरण।
रावण सभी रावण

पत्नी को टोहने लगता हूँ
नीद के बीच।

तरक्की

गाँव के मदरसे में
मास्साब ने कक्षा में
छात्रों से पूछा
तुमने रेल देखी है ?
सिन्दरी का कारखाना
भाखड़ा नाँगल देखा है ?

एक सरल चुप्पी—

दिल्ली की बिड़ला मिल
कानपुर का औद्योगिक नगर देखा है ?

निरुत्तर शान्ति—

बच्चो ! तुमने देश का नक्शा देखा है ?
आजादी के बाद वह कितना बदला है।
हम तुम्हें नया हिन्दुस्तान दिखायेंगे
कश्मीर से कन्याकुमारी

कक्षा का मौन तोड़ता है घीसू
मास्साब वह नहीं जा पायगा
कल से स्कूल नहीं आ सकेगा।

काका ने कहा है
"तू शहर नहीं जायगा
चौधरी की भैंस चरायगा
टक्कर खायगा
दूसरा करेगा—
अपना कर्ज चुकायगा"

नन्हू

नन्हू नौकर है सेठ का
नन्हू आठ-दस बरस का है
नन्हू रिंकू को खिलाता है
रिंकू सोती है
तब बरतन मलता है।

जागती है रिंकू
नन्हू उसे गुडियों से खिलाता है
नाचता है गाता है वह
रिंकू के लिए।

उसे खिलाता है
नाचती गुडिया को देख
गोद से उछलती है रिंकू
नीचे गिर रोने लगती है

नन्हू के गाल पर
चमकती है बिजली
अब रिंकू चुप है
जोर से रोता है नन्हू।
जरूरी है नन्हू का रोना
नौकर है वह।

हिसाब

लिख बेटा
हिसाब लिख
घर भर की आमदनी का

एक सौ पचपन
घर भर की आमदनी
आधी को बनिया ले गया
मूल बाकी छोड़
आधी के आधे को उधारी खा गई
आधी के आधे से महीने में क्या होगा ?

माँ मर सकती है इसी साल
दवा-दारू लकड़ी कफ़न का क्या होगा ?
बिटिया के ब्याह
तुम्हारी माँ के दमा का क्या होगा ?

गन्ना पेरते सुबह से शाम हुई
मालिक कहता क्या काम हुआ ?
शरीर कम हाड़ और चाम हुआ
जिन्दगी का यह कैसा हिसाब हुआ ?

मँहगी से रुपया कितना कम हुआ
लिख मालिक का कितना काम हुआ ।

मेरे पीछे—किसका किस पर कितना है ?
यह सब न तू भूल जायगा।
लिख बेटा लिख, हिसाब लिख ।

अलादीन

बूढ़े बाबा ने कहा
लो यह चिराग अलादीन
जो मागोगे वही मिलेगा ।

काला कुरूप चेहरा
तुम चाहोगे
गुलाब सा खिलेगा ।

रगडते ही
उत्पन्न होगा दैत्य
जो चाहोगे वही देगा,
औरत, औलाद, ओहदा, धन-दौलत
जो चाहोगे वही मिलेगा ।

अलादीन दीपक रगडता है
दैत्य—
लाता है सोना, चाँदी, चमत्कार
भूखा ही रहता है अलादीन ।

चमत्कार या करिश्मो से
पेट नही भरता

अलादीन
खेतो मे चलाता है हल
पकते है फल, नया अन्न ।

नदी किनारे

लोग
चींटियां को,
आटा डालते हैं
बन्दरों को फल
मछलियों को
आटे की गोलियां।

सूरज को अर्घ्य चढ़ाते हैं,
सूर-तुलसी के भजन गाते हैं,
नदी की स्तुति में
दीप बहाते हैं।

धारा में फेंकते हैं
दूध, फल और सिक्के।

सब कुछ
बहा ले जाती है नदी
सिक्का के लिए कूदे बालक,
दीपक, फल और सिक्के।

एक नदी सूखी हुई

नदी के रेत मे
दिखते हैं छपे हुए पदचिन्ह
आते, कुछ जाते

नदी सूखी है ऊपर-ऊपर
नीचे बहती है भीतर-भीतर ?

खो जाते है मेरे पदचिन्ह
अनगिन चिन्हो के बीच

बहुत गहरी नही है
सूखी नदी
वर्षा के तेज बहाव को
बर्दाश्त करतो है
बहा ले जाती है—
पदचिन्ह और बहुत कुछ

धँसते ही जाते हैं, मेरे कदम
भीतर-भीतर

इतिहास बनाती है, सदा बहती नदी
पर कितना जरूरी है
कदमो के निशानो का होना
और होना सूखी नदी का।

धँसते हुए कदम
करते रहेगे कोशिश
लगातार बाहर आने की

नदी चाहे बहे, भीतर भीतर ?
या कि बाहर।

ठीकठाक

मोटी गरदन

मैं एक मोटी और
सख्त गरदन को
जानता हूँ एक अर्से से
शायद तभी से
जबकि वह
नर्म और पतली रही होगी।
उतनी ही नम और पतली
जितनी मेरी अब है
या कहिये वह
कबूतर की गरदन रही होगी।

मैं उस मोटी और सख्त गरदन को
अब भी जानता हूँ।

मोटी गरदन से मेल रखना
आम हो गया है।
मोटी गरदन के साथ रहने का अर्थ
'विशिष्ट जन' हो गया है।

आधे घण्टे की प्रतीक्षा के बाद—
आता है सवाद
'साहब अभी उठे नहीं हैं'
आधे घण्ट बाद पुकारता है कोई
'साहब अभी गुसल मे हैं'।

कितने ही प्रश्नो का आता है
एक ही उत्तर
'साहब नाश्ते पर हैं'।

बढने लगती है
भीड-पर-भीड
एक एक क्षण होता है
एक एक बरस

दरख्तों की
सूखने लगती है छाया

खबर मिलती है
'मिनिस्सा' जा चुके हैं।

गाडी के फर्राटे की
आती है आवाज
आंखा से ओझल होती है कार।

लौट आई है मेरी चिट
खुद ही पढने लगता हूँ

"मात्र दशनाथ-
तुम्हारे बचपन का दोस्त"

—रेवतीरमण शर्मा

मन्दिर मे

टीबो मे,
मन्दिर

महल सा मन्दिर

हाथी के समान
हाथी पत्थर का

शेर के समान
शेर पत्थर का

भव्य हैं प्रभू
यहाँ के

देते है भव्य दर्शन

न हाथी बोलता है,
न शेर,
न प्रभू ।

बोलती है
तो बस
खेजडे पर बैठी
छोटी चिडिया ।

□

मंत्रीजी आये

मेरे गाँव मे
पहली बार
मन्त्रीजी आये ।
मोटर गाडी, भीड-भाड
एक जुलूस लेकर आये ।
मेरे गाव मे
मन्त्रीजी आये ।

मेरे गाव मे
धूल के बादल छाये
भाति-भाति के
सफेद बुर्राक लोग आये ।
भाड सरीके
छोरियो को ताकते
चमचमाते चमचे आये ।

ऊँचे ओटडे पर बैठ
मेरे गाव का मल्लू गाता है
मन्त्रीजी की बिरुदावली ।

हरखू बोलता है—
'माई बाप ! वोट दिया है
मेरे गाव मे सकूल नही है'
'खोला'
मन्त्री बैठे-बैठे बोला ।

भीड से कालू चीखा
मेरे गाँव मे
बिजली, पानी नही है, सरकार !

'मिलेगा'
तनिक उचक मत्री जी बोले ।

खडे हो मन्त्री जी ने
भाषण उछाला
सडके, हरिजन टोला
सब बनेगा ।

मन्त्री जी को गये
हजार दिन बीते
मन्त्री जी के वादे
खाली बोतल से रीते

मेरे गाव मे
मत्री जी आये ।

अब से बेहतर होता

अजनबी को देख
भौंकता है बगले का कुत्ता

आवारा पिल्ले को लटकाये
घूमता है—
लावारिस बालक

इसकी मा का कौन पति है ।
इसने किस माँ का दूध पिया है ।
कोई नही जानता ।

फटे हाल बालक
नग्नता छुपाये
ताकता है बगले के कुत्ते, और
दूध भरे कटोरे की तरफ
टुकुर-टुकुर

अगर वह भी
किसी बगले का कुत्ता होता
अब से बेहतर होता ।

माध्यम

सरकार !
वही तो किया है
जो हुक्म आपने दिया है।
सारी इबारत वही है
जो आपने बताई है।

वही हुक्म जारी हुआ है
जिसे आपने भेजना चाहा है।
वह सब हो गया है
जिसे आपने चाहा है।

वही प्रचारित है
वही घट रहा है
जसा आपका इशारा है।

वही घर जले है
जिन्हें राख होना था ,
वे ही सब जेलो मे हैं
जिनसे आप नाराज है।

उन्ही को अँधेरा बाटा है
जिनके घरो की काँपती लौ
आपके बरदाश्त से बाहर है।

व ही जगह रोशन छोडी है
जहाँ नग्न-नृत्य
सास्कृतिक चेतना के लिए
बेहद जरूरी ह ।

सरकार !
कुछ बडी तोपो को
समय पर तैयार रहने के
आदेश जारी हो चुके हैं ।

कुछ नही होगा यहाँ
बडा भावुक है यह देश
आप चाहे तब हरे पर पीला
या विपरीत
जब चाहे पुतवा सकते है ।

दगो के बाद
आपका सवेदना सदेश तैयार है
भावात्मक एकता के लिए
दमन-सूत्र से जोडा जाना
बेहद जरूरी है । ▭

शनीचर

चाँद के बाद
मगल पर जाना चाहता है आदमी
तुम अभी यह शनीचर
लोटे मे लिये फिरते हो ।

कब उतरेगा तुम्हारा
यह शनीचर ? ▭

मदारी

कितनें छुटपन से
बन गया है वह मदारी
बन्दर-बडा
मदारी छोटा बन्दर ।

बन्दर कैसे नाचेगा
बीवी कैसी लायेगा ?

बन्दर कपडे पर लेटा है
पेट पर हाथ रखे
छोटा मदारी
ढोल पीटता है
और भूख की भाषा पढने लगता है
हाथ फैला—

अब मदारी कपडे पर लेटा है सीधा
पेट पर हाथ धरे
मोटा बन्दर
उछल-उछल डुगडुगी बजाता है
दात निपोरता है कभी
दात दिखाता है
और भूख की भाषा पढने लगता है
हाथ फैला—

दोनो एक साथ ढोल पीटते
डुगडुगी बजाते
खाते है कलाबाजिया
दिखाते है नये नये करतब
करते हैं दशको को मुग्ध

खिसकने लगते हैं लोग
तमाशे के बाद

समेटता है फटे कपडे से मदारी
चन्द सिक्के
बन्दर ग्रौर मदारी
थोडा ग्रागे चल
फिर से रचने लगते हैं
खेल
भूख की भाषा पर। ▭

घर

चार दीवारी ग्रौर
सिर पर की छत
घर नही होती—

पीडा ग्रौर सन्त्रास
निर्वासित हो जहाँ
प्रेम का प्रश्रय हो,
सुख की नीद जहा डेरा डाले
वही होता है घर। ▭

रात

इतनी अच्छी क्यो होती है
रात ?

कारखाने का लौटता श्रमिक
हल कन्धे पर रखे
खेत से लौटता किसान
सभी तुम्हारे काले पल्लू की
छाया तलाशते हैं।

हर दिन आती हो तुम
तुम्हारे बेटो के दिन के गहराये
घावो की करती हो
तुम मरहम-पट्टी ।

दिन के असमान
गहरे विवरो को
दिवस के अवसान पर आ
अपने समतावादी
काले कलेवर से भर
समूचे विश्व मे फहराती हो
अमन का झण्डा।

शान्तिमयी रात
फिर भी लोग तुम्हारी
पवित्रता के शत्रु है।

तभी हर दिन
ये रगीन होटल

शहर के स्लम्ज
तुम्हारे वजूद को नकारते है ।

आदमी सियार बन जाता है
जिसे शिकार के लिए
उल्लू की तरह रात
ज्यादा अच्छी लगती है । ▭

आकाश और तालाब

एक बार मैंने
तालाब से पूछा
तुम स्थिर क्यो रहते हो ?

तुम आकाश को
और आकाश तुमको—
ताकता क्यो रहता है ?

असीम आकाश—
एक बंधा हुआ
तुम्हारा व्यक्तित्व
सवव्यापी वह
और कूलत्रस्त तुम । ▭

जिन्ह

एक सवेरे—
बच्चे ने मा से पूछा
माँ ! जिन्ह क्या होता है ?
जो सपनो मे डरा देता है ।

'कुछ नही बेटा'

नही माँ—
वह दूसरो की कमाई छीन लेता है
डराता, धमकाता है
भाग जाता है उल्टे पाव—
उसके उल्टे पाव होते है
बडे बडे दाँत
पीपल पर चढ
कठोर हँसी हँसता है
क्या यह सच है ?

'नही बेटा'

बडे बडे महलो मे
कभी अकेला
कभी अनेको के साथ होता है
जहाँ जाता है
जो भी अच्छा लगे
भक्षण कर जाता है ।
कोई नही रोक सकता उन्हे कही भी ।

'ऐसा कुछ नही बेटा'

दोपहर या अध-रात्रि को
सूनी बावडी मे उतर
चुपचाप वह ताजा खून पीता है
खाता है ताजा बच्चे का मास

'कुछ नही ऐसा'

राजमाग या बीहड मे
मौज मस्ती करता है

डरो नही बेटा—स्कूल जाओ—

कई दिनो के बाद
दो गुलाबो को
अखबार के मुखपृष्ठ पर देख
चीखती है मा

हा होता है वह—
ठीक कहा था तुमने ।

बालक

बालक खरगोश होता है
एकदम गुदगुदा, नरम और सरल
उससे सब खेलते है
खुश होते है सब ।

बालक नरम घास होता है
सबको ताजगी से भर देता है ।

बालक एकदम सफेद फूल होता है
बेदाग—निमल—कोमल
ताजी खुशबू वाला
तमाम बगीचे का आकर्षण बिन्दु ।

बालक का चेहरा
सुबह की ओस-बूंद होता है
उगते सूरज का प्रतिबिम्ब सा ।

बालक नन्हा दीपक होता है
जो आज के साथ
कल को भी रोशन करता है ।

बालक साफ सलेट होता है
जिस पर सीधी अथवा टेढी
कैसी भी रेखा बन सकती है ।

बालक कुम्हार की गीली मिट्टी जैसा है
जिसे कोई भी आकृति दी जा सकती है
राम से रावण तक ।

बेमानी लोग

ये लोग
इस झण्डे की
चिन्दी-चिन्दी कर
लगा रहे है
स्वाथ के पवन्द

ये लोग
अपने अपने परचम लहरा कर
अपनी महानता का कर रहे है
आत्म-प्रचार

कोई नही सचमुच इनके पीछे
अपने आप झण्डावरदार हो गये है

झण्डो के करते हैं
बेनामी सौदे
कबके बेमानो
हो गये हैं ये लोग

ये सब अपनी बदरगी
सूरत लिये
बाटते है विचारो की अपनी पोथी

किसे अपनायें मच के सामने के लोग ?
उपदेशो से कान पक सकते है
फसले नही पक सकती ।

धोबी

हर रोज सवेरे
बाँध को घेर लेते है धोबी

गदहे भार मुक्त हो
उन्मुक्त दौडत है
डालू पहाडियो पर

इधर धोबी
पानी मे
पीटते है अपनी आकृति
हर चोट पर करते हैं शह शह

डर के मारे पहाड
हर चोट पर करता है आयऽ-आयऽ ऽ

वस्त्रो को सुखाती धोबिन
रगती है पहाडी को
तरह-तरह के रगो से

सूरज के
पहाड पर टिकने से पहले
वस्त्रो को निमल
करते हैं धोबी ।

सन्नाटा रौदते हुए

गली का आखिरी छोर
खत्म होता है जहाँ
एक अजीव बदबू
की होती है शुरुआत ।

कौन लोग रहते होगे यहा ?
यहा तो कोई दिखाई नही देता

सब सोये है ?
खाली पडी हैं सारी खपरैले
शायद कोई है ।

इन झोंपड पट्टियो मे
एक सवेरा मरा पडा है
हर रोज मैं
काम पर जाते
सवेरे की मनहूस लाश पर से
गुजरता जाता हूँ ।

शाम को लौटने तक
सब जाग उठते है
सवेरा समझ ।

बढते धु धलके के साथ
युवा हो उठती है झोंपड पट्टिया
अपनी सम्पूण रगीनियो के साथ ।

और फिर सुबह काम पर जाते
वही खामोश मौत का सन्नाटा रौदते हुए
गुजर जाता हूँ मैं ।

एक अन्तर्व्यथा

दरीबा के पहाड से
उठता ताम्र-मुखी सूरज
निकला हो जैसे
पिघला ताबा
दरीबे के गभ को चीर

दरीबा का गरीबा
सुबह-सुबह
सूरज के हाथो भेजता है
खेतडी के हरखू को
दुआ-सलाम

पढा-लिखा सूरज
साँझ पहुँचाता गरीबा की चिठ्ठी
हरखू के पास
पढकर सुनाता है सूरज
गरीबा ने लिखी है तुझको राम-राम
भेजी है तुझे ताम्र वर्णी मुस्कान

भूगभशास्त्री एक किये हैं
तुम दोनो को अन्दर ही अन्दर
पर सोच, कहता है सूरज
न ताबा तेरा है न उसका है

तुम्हारे तो सिफ हाथ है
जिन्हे बहुत जरूरी है—मिलना ।

पहली वर्षा

मेरे सामने
पहाड का विशाल ककाल
सुलगता है ।
मेरे नीचे धरती
टूक टूक हुई लगती है ।
मेरे पास का तालाब
पपडाया लेटा है ।

बादलो के चिथडे पहने
फटे हाल सूरज
रुक-रुक करता है
आग की वर्षा ।

उमस—उमस और उमस
अन्त करण मे
कितना घुट गया है
बाह्य वातावरण ।

अभी सामने
पहली बार
पहाड के सिर बँधे हैं बादल
साफे की तरह
हवा फिर बन्द होगई है
उमस फिर तेज

कडकडाहट के साथ बादल
बरसने लगते है
यहां से वहां तक
लौटती है जिन्दगी
मिट्टी की सौंधी सुगध के साथ ।

पहाड पर सुबह मैं

सुबह पहाड पर चढता हूँ मैं
मेरे पीछे होता है सूरज
पीठ थपथपाता

सुबह पहाड पर
बहुत लम्बी हो गई है
मेरी आकृति

परछाई ने मेरा सिर
एक ऊँचे शिलाखण्ड पर रख दिया है
कितना ऊँचा उठ गया हूँ मैं
गर्वित होता हूँ तनिक

घाटी की ओर बढता हूँ
देखता हूँ
घाटी की गहराई
नीचे बहुत नीचे
एक चट्टान पर
पडा दिखता है मेरा सिर ।

उल्टे पाँव लौटता है मेरा अहम्

पीछे से धूप के साथ
हँसने लगता है मौन।।

खिल न पायेगा पलाश वन

ऊँचा सर किये पहाड
टोहने लगता है/अपने घायल पैर
हर सुबह—अनगिन कुल्हाडियो पर
चढाई जाती है धार।

सुबह सवेरे—तेजधार कुल्हाडियो के साथ
चढने लगती हैं टोलिया
सूरज चढने के साथ।

सर्पिल चढाई मे
छितर जाते हैं लकडहारे-लकडहारिने—

चीड-घौक-पलाश वन पर
होने लगता है तेज प्रहार, कत्लेआम
कौन चिपकेगा यहा
टूटने लगता है हरापन
यहा से वहाँ तक

अनुवरा होगी घाटिया एक दिन
दिखेंगे सुलगते नग्न पहाड
न जगली फूल होगे
दिखेगी न कभी दौडती हिरणियाँ

कैसे चहकेगी चिडिया यहाँ
दरख्तो के झुण्ड न होगे
आयेगी कैसे तोतो की बारात

घटाएँ घिरेंगी न यहाँ
न रहेगा झरने का सुरीला सगीत—अगली बार
हो न सकेगी—कविता पहाड पर
खिल न पायगा पलाश वन।

जगल मे अमगल–1

गहरी बहुत गहरी
वियाबान जगली घाटियो मे
कही उजाला, कही अँधेरा

चमकते है सहमे से
जगली अड़ूसा के सफेद फूल
अकेले खिले हैं यहाँ से वहा तक।

काली घाटी की हरियाली मे
चढती चली जाती है सडक
सर्पिल, ऊँची-नीची
होती है काकवाडी-द्वार पर खत्म
सामती अतीत का प्रतीक है यह द्वार

लम्बे हाथ फैला
स्वागत करता है बोधिवृक्ष।

पहाड और पहाड
विकट विस्तृत फैले पहाडो के बीच
दिखता है काकवाडी किला
बन्द है दाराशिकोह की आह यहाँ

यहा वहाँ छितरे हैं
ऊँट की कूबड से पहाड
धारण किये हैं
धौक, खैरी और पलाश के
रग विरगे परिधान।

हवा की सरसराहट से दौडते हैं
सूखे पत्ते

गहराता है सन्नाटा
बाघ की दहाड के साथ
लटालट दरख्तो से गिरते हैं
कलुप-मुखी बानर
होता है सारा जगल विह्वल
पहाड से टकरा
लौटने लगती है अनुगूँज ।
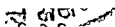
राजा की दहाड पर
सास रोक
आखे बन्द कर
जहा की तहाँ खडी हो जाती हैं
नील गाय, चीतल और साँभर ।

धीरे-धीरे कम होती है दहाड
मारे गये निर्दोष पशु की
भयाक्रान्त चीख के साथ ।

होने लगता है
सारा जगल मौन के मुखर
वैसे ही कुलाचे भरने लगती है
सुनैनी-चीतल ।

राजा का कोई दोप नही
जगल मे गहरे उजाले सोता है
जगल का राजा, भूख लगने तक ।

फिर होगी दहाड
लगेंगे पख फिर
हवा होगे
नील गाय, चीतल, साभर के पाँव ।

जगल मे अमंगल–2

किसी-चित्रकार के चित्र सी
दिखती हैं
झोपडियाँ—पलाश पत्तो की
बिखरी हैं पहाड तले
या कि ढलानो पर ।

आता है सूरज के साथ उजाला
जाता है सूरज के साथ उजाला
आज भी लगते हैं
तीन सदी ईसा-पूर्व के ये लोग
कोरे-सीधे- सरल ।

दुरूह घाटियो का सीना चीर
चीता-बाघ से बेखबर
जाता है रमजूदादा सोलह कोस पार
घी बेचने
बदले मे लाता है
गुड-गाढा-धोत्ती

कुछ भी तो नही है यहाँ
भेड, बकरी को बाघ नही
हरी वर्दी उठा ले जाती है ।
कहते है जगल खाली करो
तुम नही, बाघ रहेगा—
समझाते है डडे की भाषा के साथ

आते है वे पौ-पौ के साथ
ले जाते घी / मक्का

होते है
बेइज्जत, बेम्रावरू
हर दिन ।

हमने न मारी चिडिया
कहते मोर मारा तुमने
हमने न मारी जगली-बिल्ली
कहते मारा वाघ तुमने

गह-गह गल रहे हम जगल मे

कहाँ जाये ?
"बिना खेत खलिहान
बिना रुजगार"

ग्राग लगी है जगल मे ।

अकार्डियन

तुम सबके ब्याह मे
बजाते हो बैण्ड के साथ
अकार्डियन खुशी से

नाचते है सब
तुम बजाते हो अकार्डियन झूम-झूम

भव्य हो जाता है
पूरा माहौल

तुम गाते हो
रस-सिक्त हो जाता है
सारा वातावरण

युवा अकार्डियन वादक
जब तुम ब्याह ने जाओगे
क्या तुम नाचोगे / गाओगे
इसी तरह बजाओगे अकार्डियन

होगा यही बैण्ड ?
क्या होगा वातावरण इसी तरह
रस सिक्त
होगा वैसा ही भव्य माहौल ?

मृण-मूर्ति

बहुत कुछ सुना है मैंने
उनके बारे मे

वही है वे
जिनके मुँह
भुतहा नकली चेहरे लटके हुए है
करते हैं जो
अपनी पहचान अनचीन्ही

वही अब
करते है एक-एक मृण-मूर्ति की पहचान

उन्हे, मिट्टी की होने के
अभिशाप से दिलाते है मुक्ति

गगा मे बहाने का
करते हैं नायाब फैसला
ऊँची टेकरी पर बैठ
सरल-मना ?

सूर्यास्त

शोर भरे शहर को छोड़
पश्चिमी पहाड़ के त्रिकोण पर
आ बैठा है सूरज

नीचे काफी नीचे
पहाड़ की तलहटी में / लेटे बाँध की
काली होती लहरों को
तरह तरह के
स्वर्णिम आभूषण पहनाता है।

पहाड़ की निस्तब्धता से विमुग्ध हो
देखता है लौटता पक्षी दल

शान्त किनारों के बीच सिमटी
पानी की लहरें
परिवर्तित होती हैं
होती है रूपायित पीत
कभी नीली-लाल।

लहरें सिमटती हैं / सिहरती हैं
होती है गुत्थम-गुत्था,
मिलती बिखरती लहरें।

दरख्तों पर बैठते पक्षी
लेते हैं—
सूरज से अलविदा

लो उतर गया है
अतलान्त घाटी में सूरज।

मेरा शहर

अभी कुछ दिन पहले तक
बहुत छोटा था
मेरा यह शहर
उम्र के साथ
बढा है यह शहर
कई-कई बार अपनी ही सीमाएँ
लाघ गया है।

कुछ दिन पहले
शहर की रौनक कुछ और थी
अब तीज-त्योहार
छप की धाक नही जमती

मुश्किल है अब
सडक से गुजरना
बूढे नही बतियाते
सब ओर दौड-भाग है
निर्वासित हुए है कहकहे।

अपनी ही धुन मे
खोने लगा है शहर
अपनी पहचान।

सुबह बालको को
शाला जाते देखता है शहर।

आंखे ठहर जाती है
होटलो पर
कप-प्लेट धोते हैं अबोध बालक
कच्ची बस्ती के बालक सिर झुका
बुनते है टोकरिया दिन भर

और इस तरह यह शहर
फैल गया है
चारो ओर
निर्मम, बेचैन और उदास।

बेटे के लिए

तुम्हारी योग्यता के
बावजूद
मेरा
नौकरी मे रहते
मरना
कितना जरूरी हो गया है

सिफ
तुम्हारी नौकरी के लिए।

गाधी प्रतिमा

[1]

आदमकद गाधी
खडे है पत्थर हुए

जव पत्थर के न थे
लोग उन्हे देखते, सुनते और
पीछे चलते थे

अव गाधी
दिन मे
तेज गति वाहन
और मुँह लटके
पद-चालको को देखते हैं
कोई नही देखता उन्हे।

[2]

प्रस्तर-खण्ड से
निकल आये है गाधी
सवेदनशील / सहिष्णु
सदा की तरह

कौआ, चील, कबूतर
सभी बैठते है
बारी-बारी

साल मे आता है आदमी
दो-तीन मतबा

माला बदलने
या बदलने गाधीवाद।

गाधी खडे है [illegible]
वहती भीड मे
  पत्थर से, एक अर्से से यहां ।
पीछे गाधी भवन है

हरी दूब पर
अडिग खडे हैं
दाये बाये मौलश्री और
अशोक वृक्षो के बीच गाधी ।

सामने सूरज
तिरछी किरणो से
गिराता है गाधी को सडक पर

सभी—
गुजरते है
प्रतिच्छाया पर से/अनजाने मे ।

[4]

आतप-वर्षा
घोर-अधकार
रात की नीरवता
सहती है गाधी-प्रतिमा

उसके पार्श्व मे है
गाधी-भवन
वहा सभी कुछ होता है
गाधी के नाम पर ।

होती है बहसें
गाधी की प्रासगिकता पर
लगता है प्रश्नचिन्ह ।

- रेवती रमण शर्मा (1954-1980)

- प्रकाशन—
  जमीन से जुड़ते हुए (कविता संग्रह) 1978 राजस्थान के नये कवियों की प्रगति चेतना (प्रकाशाधीन) देश एवं प्रान्त की विभिन्न पत्र पत्रिकाओं मे नियमित रूप से प्रकाशित।

- प्रान्त की लब्ध-प्रतिष्ठित युवा सृजन कर्मियो की संस्था 'पलाश' के संस्थापक, अध्यक्ष (1980-82)।

- वर्तमान मे— सहायक निदेशक (क) स्थानीय निधि अंकेक्षण विभाग अलवर (राज)-301001